दैनिक भास्कर
रविवार, 31 जनवरी 2021 लखनऊ

सकारात्मक और नकारात्मक

गीतांजलि सक्सेना

वह कौन थी? विश्वास माने बताने में असमर्थ हूँ। यह बता सकती हूँ कि यह हिन्दी की बहुचर्चित फिल्म रही है। यही नहीं पति, पत्नी और वो के विषय पर अलग-अलग दौर में कई फिल्में बन चुकी हैं। वह काफी चर्चित और हिट फिल्मों की श्रेणी में गिनती की जाती है। यहां उनकी कहानियों की चर्चा नहीं करनी वाली हूँ। हम सभी ने अपने जीवन में देखी ही होगी।

रिश्तों में वो या वह की भूमिका क्या होती है? यह रिश्ता क्या कहलाता है ... में वह कौन होता है। इस रिश्ते को गहराई से समझने और जानने की जिज्ञासा है कि वो चरित्र का किन्हीं दो लोगों के बीच रिश्तों में आना और फिर किस हद तक अपने इस रूप में रिश्तों में प्रवेश करते हैं और फिर दो लोगों के सम्बन्धों में नीरसता लाने में सफल हो पाते हैं। सच्चाई तो यह है कि सामाजिक ढांचे में रिश्तों की संरचना कुछ इस तरह निर्धारित की गई है, जहाँ हर एक रिश्ते को नाम से पहचाना जाता रहा है। इस व्यवस्था में बेनाम रिश्ते का कोई स्थान नहीं रहता है। वो को रिश्तों में जगह बनाने की कोशिश को निषेध जोन में दाखिल होना और इस नियम की अवहेलना करने का आरोप लगाया जाता है। यह हम सब भी जानते हैं। परिवार में ऐसी परिस्थितियां बनना कई बार घातक साबित होती रही हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि हमने अनेकों बार इस तीसरे व्यक्ति के आने से रिश्तों में दूरियाँ, मनमुटाव ही नहीं, अलगाववाद की स्थिति का सामना भी होते देखा है। ऐसी परिस्थितियों में सामाजिक व्यवस्था को चुनौती ना देते हुए, इस चरित्र को सकारात्मक चश्मा पहन कर समझने और जानने की कोशिश की है।

वह एक छोटा सा शब्द है, जिसका साधारणतया दूर से किसी भी व्यक्ति या वस्तु को दिखाने और बताने के लिए किया जाता है। ऐसा भी कहा जा सकता है कि जब दो लोग एक दूसरे से आपस में बातचीत करते हुए तीसरे इनसान की ओर संकेत किया जाता है, तो असल में दो लोगों के रिश्ते में किसी तीसरे के साथ का कोई स्थान नहीं रहता है। वह दोनों के बीच प्रतिद्वंद्वी के रूप में देखा जाने लगता है। यहाँ गौर करने की जरूरत है, कि घर हो या बाहर, हमारे जीवन में इस इनसान के प्रवेश से हमें अपने नजरिये को देखने में घुमाव तो मिलता ही है। हर उस स्थिति में नई परिस्थितियों को समझने के लिए नये रास्ते और समाधान को खोजने की ओर प्रेरित भी करता है। इन हालातों में वह कि रिश्तों में जगह ... यूँ ही दर्ज हो जाती है। वैसे तो समाज शास्त्र में इसका कोई वर्णन नहीं है। इसे परिभाषित कर के ना ही कोई व्याख्या की गई है।

यहाँ उनकी पैरवी करना विषय का उद्देश्य नहीं है। इनका किसी भी रिश्ते में आने से परिस्थिति आप के अनुकूल नहीं रहती और अनचाहा वातावरण का सामना होता है। इन हालातों में हर कोई तर्क संगत नहीं रह पाता और उसे अपने जीवन में शामिल करना बेहद मुश्किल हो जाता है। दरअसल, परिवार में वह के अस्तित्व को सरलता से नकारना ही एकमात्र विकल्प रह जाता है। विशेषकर जब बात पति पत्नी के बीच की हो...। इसका अन्य कारण यह है कि सामाजिक व्यवस्था में परिवारों में रिश्तों की माला को इस तरह पिरोया जाता है कि जिसमें हर एक रिश्ते का नाम होता है। जहाँ दो लोगों के बीच हुए रिश्ते उनकी भावनाओं से जुड़े होते हैं। यही हमारी परंपरा और संस्कृति का हिस्सा भी है। यह सब रिश्ते नितांत निजी या पारिवारिक सम्बन्धों की श्रेणी में रखा गया है। जो रिश्तों को निभाने की कसमें व जिम्मेदारियां से बंधे होते हैं। ऐसे ही रिश्तों को हमारे समाज में मान्यता प्राप्त है। दो परिवारों के बीच सम्बन्ध होने से बने इन्हीं रिश्तों को समाज में स्वीकृति प्रदान होती है। प्रकृति का नियम भी यहीं है कि जहाँ ईश्वर द्वारा रचित इन रिश्तों को निभाने का अवसर प्रदान होता है।

कुछ रिश्ते ऐसे भी होते हैं, जो औपचारिक होते हैं। जो हमारे कार्य क्षेत्र से जुड़े रहते हैं। यहाँ भी तीसरे व्यक्ति की भूमिका का आकलन करते देखा गया है। हमने कितनी बार दो सहयोगियों को बातचीत करते हुए देखा और सुना होगा कि अरे यार उसने बॉस पर क्या जादू कर दिया? उसका प्रमोशन हो गया। यह वही तीसरे शख्स की ओर संकेत करके बोला जा रहा है। ऐसा नहीं है कि पुरुष जाति अपनी गपशप में पंचायती बैठकें ना करते हों। किन्तु महिलाएं उनकी तुलना में हर क्षेत्र में आगे निकलने की होड़ में यहाँ भी बाजी मार दिया करती हैं।

महिलाएं तो वैसे ही अपने घर में चर्चित हैं क्योंकि वे ना सिर्फ अपने ही, बल्कि दूसरे के पिटारे को भी खोलने की कोशिश में दिनरात लगी रहती हैं। किसी तीसरे व्यक्ति या वस्तु के बारे में सम्पूर्ण जानकारी हासिल करने में उनकी रुचि रहती है। कुछ का मानना है, कि यह उनके अधिकार क्षेत्र का एक अहम हिस्सा है। इस ओर उनके हर सम्भव प्रयास में कमी देखने को नहीं मिलती है। सफलता हासिल होने पर महिला पार्टियों में उनका जिक्र खास आकर्षण और चर्चित विषय रहता है। अरे पता है उसके यहाँ आजकल बड़ी चहल-पहल है...कुछ तो है, जो दिख रहा है। किन्तु हम सब से छिपाया जा रहा है। अपने आचरण में हर बात उगलने की आदत कुछ को स्वभाव से कमजोर बनाती है।

खेल का मैदान भी इस वो से नहीं ... दो खिलाड़ियों के बीच भी इस तीसरे व्यक्ति को संबोधित करते सुना जाता है। दोनों के बीच उसका प्रवेश ना चाहने पर भी हो ही जाता है। किसी प्रतियोगिता या मुकाबले में बराबरी करने वाले या जीतने वाले की ओर इशारा करते हुए कहते सुना गया है कि यार ... मैं उससे हार गया। अधिकांश परिस्थितियों में वह, वो, या तीसरे शख्स की उपस्थिति से रिश्तों में नकारात्मक प्रभाव देखने को मिलते हैं। जिस कारण इस चेहरे को अपने जीवन में स्वीकार करना मुश्किल होता है।

अपनी बात को बढ़ाते हुए सिक्के के दूसरे पहलू पर प्रकाश डालना जरूरी लग रहा है। सिक्के के दोनों पहलू एक दूसरे से जुड़े होते हुए भी एक दूसरे से विपरीत ही होते है, जिसमें एक का अस्तित्व दूसरे के बिना अधूरा है। उसी प्रकार रिश्तों में तीसरे का आगमन ...

आपको जीवन में अनेक सकारात्मक पहलू की ओर प्रेरित करता है।

परिस्थितियों से उत्पन्न चुनौतियों से लड़ने की शक्ति और साहस प्रदान करते हैं।

कोई भी समस्या, चाहे व्यक्तिगत या पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित हो, उसका हल अनेक उपाय और संभावनाओं से भरा रहता है।

हर नकारात्मक पहलू जैसे भय, ईर्षा और दुख की अनुभूति हमें सबक सिखाती हुई याद दिलाती है कि रिश्तों की अहमियत हमारे जीवन में क्या है। हर व्यक्ति अपने सुख व शांति प्राप्त करने के लिए वह सब कुछ कर गुजरता है। जिसका अनुमान लगाना किसी दूसरे की समझ से परे हो जाता है।

प्रतिकूल वातावरण ... हमें धैर्य रखना, मानसिक संतुलन बनाए रखना, आगे बढ़ने के लिए नए दिशा और निर्देश जारी करते हैं। जिससे हमें साहस और बल मिलता है।

कहने का तात्पर्य यह कि रिश्तों में दाखिल हुए विवाद, अविश्वास, हर कड़वाहट एवं दूरियों को कम करना दो लोगों की आपसी समझदारी में ही छुपी है।

सिक्के के दो पहलू

हमने अनेकों बार इस तीसरे व्यक्ति के आने से रिश्तों में दूरियाँ, मनमुटाव ही नहीं, अलगाववाद की स्थिति का सामना भी होते देखा है। ऐसी परिस्थितियों में सामाजिक व्यवस्था को चुनौती ना देते हुए, इस चरित्र को सकारात्मक चश्मा पहन कर समझने और जानने की कोशिश की है।

दो लोगों की समझदारी में वो का अस्तित्व। इस चरित्र को सकारात्मक चश्मा पहन कर समझने और जानने की कोशिश जरूरी